ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME : I ISSUE IX Oct. - Dec. 2014

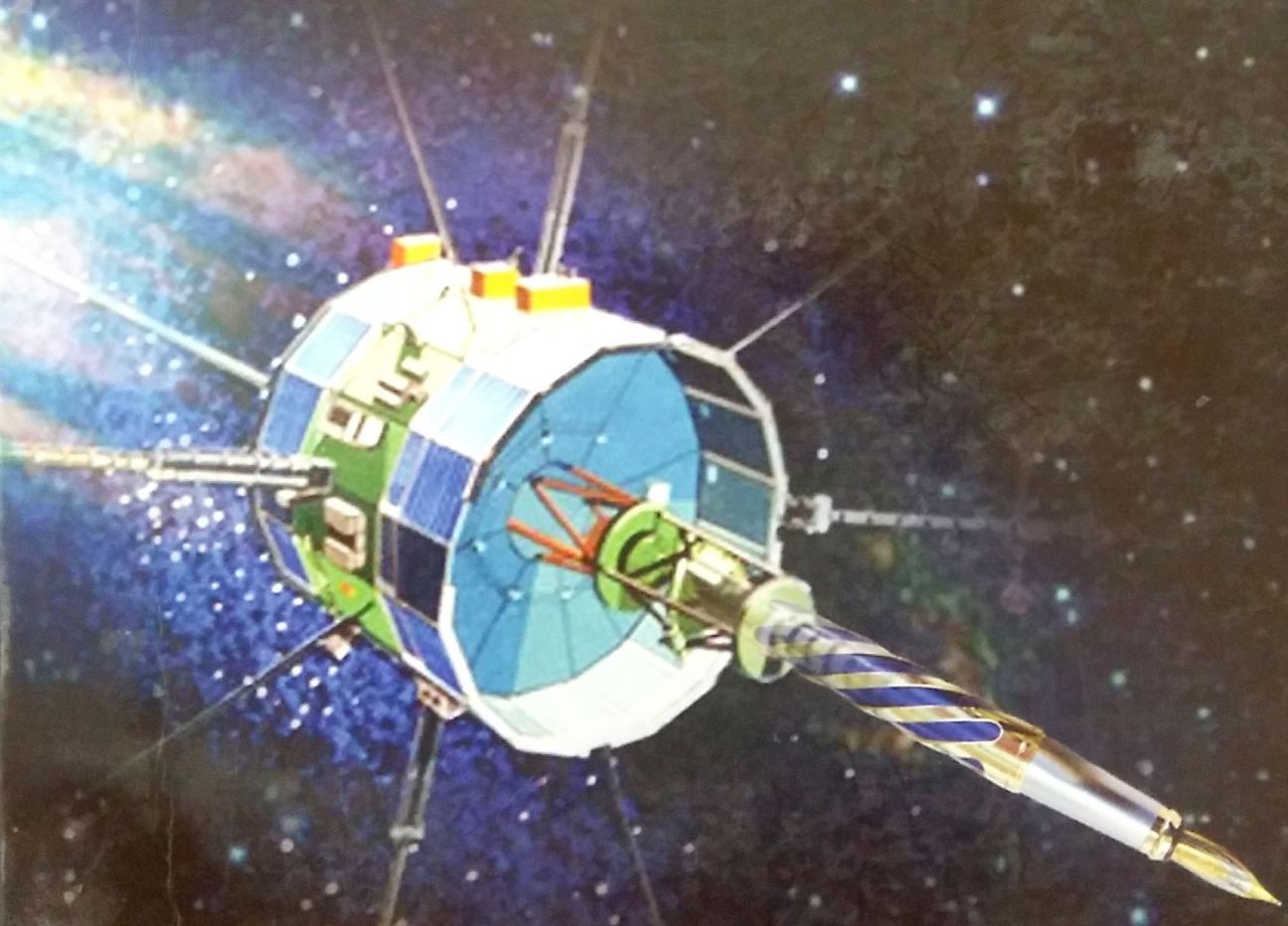

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Dr. Sarkate Sadashiv

Scanned by CamScanner

२८	दक्खिनी हिंदी का स्वरूप एवं विकास	डॉ. मिर्जा असद बेग	१०४
२९	इक्कीसवीं सदी : दलित साहित्य	डॉ. बालाजी जोकरे	१०६
३०	हिंदी दलित साहित्य में वास्तववाद का भविष्यवेध	डॉ. मीना खरात	१०८
३१	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम	११२
३२	दलित उत्पीडन की ऐतिहासिक त्रासदी का दस्तावैज जूठन'	डॉ. उषा बनसोडे	११५
३३	महानुभाव पंथाचे प्रवर्तक महात्मा चक्रधर स्वामी	व्हंदरणे करुणा त्र्यंबकराव	११८
३४	William Congreve's The Way of the world	Dr.Kuldeep K. Mohadikar,	१२२
३५	Sri Aurobindo's 'Savitri' as an Epic	Prof. Santosh D. Ghangale	१२४
३६	Images of Women in William Faulkner's The Sound and the Fury	Mr. Kivne Sandipan Tukaram	१२७
३७	BUDDHISM PERSPECTIVE IN BRUNO'S DREAM	Asst Prof. Korde Rajabhau Chhaganrao	१२९
३८	"Betrayal" by Marathi Readers and Critics: Kiran Nagarkar	Gadekar Kailas Krishna	१३२
३९	"A CASE STUDY OF WATERSHED DEVELOPMENT AREA OF KADWANCHI VILLAGE"	Shivanand T. Jadhav	१३४
४०	बीड जिल्हातील मका पिक उत्पादन व वितरण	डॉ. विष्णू सोनवणे	१३८
४१	धुळे जिल्ह्यातील स्वातंत्र संग्रामात गुजराथी समाजाचे योगदान	अनिल साहेबराव पाटील	१४१
४२	अहमदनगर जिल्ह्यातील स्वातंत्र्य सैनिक व त्यांचे योगदान	भानुदास रामदास महाजन	१४३
४३	शिवकालीन ग्राम प्रशासन	प्रा. सावंत के.डी.	१४५
४४	मंदिर ही धर्म व संस्कृती प्रसाराचे केंद्र	प्रा. चव्हाण आर. ए.	१४९
४५	सरदार वल्लभभाई पटेल आणि तत्कालीन गृह विभाग	प्रा. जाधवर बी.डी.	१५२
४६	बंजारा समाजाचा सांस्कृतिक इतिहास	डॉ. राम फुन्ने	१५६
४७	एकाकी अवस्थेतील संताजी घोरपडेची स्वराज्यनिष्ठा	प्रा. राम भोसले	१५८
४८	हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील मंठा तालुक्याचे योगदान : एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा.डॉ. एस.के. कमळकर	१६०
४९	भारत मे ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता की स्थापना	प्रा.डॉ.शेख कलीम मोहियोद्दीन	१६३
५०	ग्रामीण विकास प्रक्रियेत संत गाडगेबाबा ग्राम स्वच्छता अभियानाची भूमिका	विठ्ठल भिमराव मातकर	१६६
५१	लिंगभाव विषमतेचा परिणाम : स्त्री-भ्रूणहत्या	प्रा. डॉ. डी. एस. नामूर्ते	१६९
५२	कृषीक्षेत्रातील विपन्नता आणि ग्रामीण कर्जबाजारीपणा	प्रा. डॉ. भगवान डोंगरे	१७४
५३	A sociological analysis of Dalit atrocities in Maharashtra: A special reference to Marathwada region 2001-2010	Mr. Samadhan Bhimrao Gaikwad	१७८
५४	PARAMETRIC ANALYSIS Nagzari sub basin Of Pedhi River	Dr. Vandana A Deshmukh	१७९

Scanned by CamScanner

Power of Knowledge Volume : I Issue :IX Oct.-Dec. 2014 ISSN 2320- 4494

भारत मे ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता की स्थापना

प्रा.डॉ.शेख कलीम मोहियोद्दीन
इतिहास विभाग प्रमुख.
मिल्लीया कला व विज्ञान महाविद्यालय बीड.

ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास मे एक महत्त्वपुर्ण घटना थी। कंपनी की स्थापना तक भारत पर अलग अलग रास्तो से अक्रमण हुए थे। मगर ये सब आक्रमणो से हटकर अंग्रेजो का आक्रमण निर्णायक और दुरगामी स्वरुप का था। व्यापार करणे का उददेश सामने रखकर अंग्रेजो ने अपनी व्यापारी वखार भारत मे स्थापन करने का प्रयत्न शुरु किया। उस समय दुनीया मे व्यापारी स्पर्धा शुरु थी। नया भुभाग और नइ बाजार पेठ प्राप्त करने की स्पर्धा चल रही थी। उस स्पर्धा मे पोर्तुगाल, डच, इंगलंड, फ्रान्स आदि राष्ट्रो का समावेश था। पोर्तुगाल ने 1498 मे भारत के पश्चिम किनारे पर अपनी वसाहत की स्थापना की पोर्तुगाल के वसाहत की स्थापना के बाद युरोप के देशो मे नये भुभाग मे वसाहत स्थपना करने मे एक प्रकार की तीव्र स्वरुप की स्पर्धा आरंभ हुई। युरोपीय राष्ट्रो ने एशिया खंड के राष्ट्रो मे वसाहत स्थापना करणे की ओर ध्यान केंद्रीत किया। भारत मे प्रथम प्रवेश करणे वाले युरोपीय पोर्तुगीज थे। वहसातवाद के लिए राजकुमार हेन्री के काल मे पोर्तुगीजो ने अधिक परीश्रम किया।

ईस्ट ईंडिया कंपनी की स्थापना: युरोप के अलग अलग राष्ट्रो के अनुसार इंगलंड की भी भारत और पुर्व के देशों के साथ व्यापार प्रस्थापीत करने की इंग्लँड की भी इच्छा थी। 31 डिसेंबर 1600 मे इंगलंड की राणी एलिझाबेथने लंदन की व्यापारी कंपनी को पूर्व के देशों से व्यापार करने की सनद दी। इस लीए ईस्ट इंडिया कंपनी असितत्व मे आयी। वो घटना भारत के इतिहास की दृष्टी से बहोत महत्वपूर्ण थी। इस कंपनी के द्वारा कॅप्टन हॉकीन्स भारत मे सुरत इस शहर मे आया। उस समय भारत मे मोगलो की सत्ता अरतीत्व मे थी। मोगल सम्राट नुरुद्दिन मोहम्मद जहाँगीर ने 1612 मे उसको भारत मे व्यापार करनें की अनुमती दी। कॅप्टन हॉकीन्स ने सूरत इस शहर मे अपनी व्यापारी वसाहत स्थापन की। 1615 मे इंगलंड का राजा जेम्स प्रथम ने और व्यापारी सहूलते जहांगीर से प्राप्त करने के लिए अपना प्रतिनिधी सर थॉम्स को भेजा और अधिक व्यापारी सहुलते जहाँगीर से प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त की। भारत मे शांती पूर्वक मार्ग से व्यापार करने की अनुमती अंग्रेजो को प्राप्त हुई।

चेन्नई (मदरास) मे 1640 मे अंग्रेजो ने कुछ जमीन खरीद कर सेंटजार्ज किले का निमार्ण कीया। हुगली इस स्थान पर 1651 मे अंग्रेजो ने एक व्यापारी वाखार स्थापन की। 1661 मे मुंबई अंग्रेजो ने प्राप्त की। बंगाल का मोगल सम्राट नियुक्त मुख्याधिकारी शाहिस्ता खान ओर अंग्रेज इन मे 1688 मे संघर्ष हुआ। उस संघर्ष मे मोगलो ने अंग्रेजो को हराया। अंग्रेजो ने मोगलो का सामर्थ्य देखकर उनसे समझोता किया। 1707 मे महत्व कांक्षी कर्तबगार मोगल सम्राट औरंगजेब का निधन हुआ। उसके उत्तराधिकारी अकार्यक्षम, अपात्र और राज्य करने अयोग्य थे। इसलिए मोगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया आरंभ हो गयी। अनेक मोगलो के प्रांताधिकारी मोगल सत्ता को छोडकर स्वतंत्र हो गये। मोगल सत्ता के विघटन का लाभ ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी उठाया। 1717 मे दिल्ली के सिंहासन पर फरुख सियार ये बादशाह था। उसने बंगाल मे अंग्रेजो को करमुक्त व्यापार करने की अनुमती दी।

भारत मे ईस्ट ईंडिया कंपनी के आगमन के पश्चात कंपनीने अपने वसाहत वादी धोरण के अनुसार

Scanned by CamScanner

अनेक महत्वपुर्ण स्थानो पर अपनी व्यापारी वाखार स्थापन की। माल की आयात निर्यात करते करते कंपनीने व्यापार क्षेत्र मे और दुसरे क्षेत्र मे अधिक प्रमाण मे अपना वर्चस्व निर्माण कीया। भारत मे व्यापार पुर्व मे व्यापार व अन्य राष्ट्रो मे व्यापार प्रस्थापीत करने के बाद भारत मे माल खरीद कर वो माल बेचने के संबंध मे ईस्ट ईंडिया कंपनीने अपनी सत्ता प्रस्थापीत की।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1664 मे अपनी वसाहत का विस्तार शुरु कीया अंग्रेजो ने 1686 मे कलकत्ता मे अपनी वखार स्थापना की। पोर्तुगीजों की मदत से अंग्रेजो ने उच्च व्यापारीओ का संपुर्ण उच्चाटन कीया। गोवा, दिव, दमन, इस भाग मे केवल पोर्तुगीजो की वसाहते थी। ईस्ट इंडिया कंपनीने व्यापार के साथ साथ भारत के समुद्र किनारे पर महात्वपुर्ण स्थानो पर अपनी व्यापारी वखार स्थापन कर उन्हे सैनिकी दृष्टी से मजबुत बनाया।

प्लासी की लढाई 23 जुन 1757: 1707 मे मोगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात मोगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया आरंभ हो गयी। ऐसी परीस्थीती मे अली वर्दी खान ने 1740 मे मोगल साम्राज्य को छोडकर बंगाल मे स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। 1756 मे अलीवर्दीखान का निधन हुआ। उसके निधन के बाद उसकी कनिष्ठ पुत्री का पुत्र सिराज-उद-दौला बंगाल का नवाब बना क्योंकी अलीवर्दी खान निपुत्रीक था। सिराज-उद-दौला के दौर मे उसके अंग्रेजो से संबध अधिक बीघड गये। सिराज उद दौला का सेनापती मीर जाफर अंग्रेजो से मील गया। इस बात की जानकारी सिराज उद दौला को हो गयी थी। इस्ट इंडिया कंपनी का सर्वोच्च अधिकारी रॉबर्ट क्लाईव इस प्रयास मे था की अलीवर्दी खान का उत्तराधिकारी अत्याधिक शक्ती शाली ना हो आंग्रेजो की योजना बंगाल को लुटने की थी। नवाब को आर्थीक हानी पहुंचा कर उसको दिवालीया बनाने की योजना अंग्रेज बना रहे थे। इसके अलावा नवाब के विद्रोही कर्मचारीओ को अंग्रेज अपने यहाँ शरण देते थे।

नवाब के विश्वास पात्र व्यक्ती, माणिक चन्द धनाढय व्यापारी अमीचन्द और जगत सेठ और कुछ नवाब के निकटवर्ती अन्य व्यक्ती व सेनापती अंग्रेजो से मिल गये थे। रॉबर्ट क्लाईव्ह बंगाल मे अंग्रेज निष्ठ व्यक्ती को नवाब नियुक्त करना चाहता था। "ईस्ट इंडिया कंपनी का एक अधिकारी वाटसन नवाब को चेतावनी दे चुका था की वो उसके देश मे ऐसी आग लगायेगा जिसे गंगा का पानी भी नही बुझा सकेगा। क्लाईव्ह इस कथन को अक्षरक्षः प्रति पादित करना चाहता था"[1]

अपनी उस योजना को सफल बनाने के लिए क्लाईव्ह को नवाब के कोषध्यक्ष राय दुर्लभ, सेनापती मीर जाफर, और बंगाल के साहुकार जगत सेठ का सहकार्य मील रहा था।

प्लासी के प्रत्यक्ष युध्द के समय मीर जाफर का सिरजा उद दौला के प्रती व्यवहार देखकर सिराज उद दौला ने मीर जाफर को बुलाकर अपने संबंधो का स्मरण कराया और अपनी पगडी उसके चरणे मे रख दी और कहा की अब इस पगडी की इज्जत बचाना आपके हाथ मे है। मीर जाफर ने नवाब के समक्ष उसके एकनिष्ठ रहने की कसम खाई मगर जैसे ही नवाब के जाने के बाद उसने कलाईव्ह को संदेश भेजा की आक्रमण की गती अधिक तीव्र कर दि जाए। मीर जाफर के उस कुकृत्य के बारे मे प्रसिध्द इतिहाकार डॉ. एम.एस. त्यागी ने अपनी कीताब आधुनिक भारत मे कहा है की "मीर जाफर को बंगाल की नवाबी दिख रही थी। उसे देश की चिंता लेश मात्र भी नही थी। मीर जाफर अपने स्वार्थ मे अन्धा हो चुका था। उसे इसका भी ध्यान नही रहा की उसके इस कुकृव्य से देश पराधीनता की जंजीरो मे जकड लीया जायेगा"[2]

सिराज उद दौला का कोषाध्यक्ष दुर्लभ राय ने ये

Scanned by CamScanner

...सेनापती के नवाब के सैनिक युध्द मैदान से भाग रहे थे इस कारण नवाब के सैनिको का मनोधैर्य समाप्त होगया और नवाब सिराज उद दौला प्लासी के युध्द मे हार गया। बंगाल मे अंग्रेजो का वर्चस्व प्रस्थापीत हुआ। सिराज उद दौला की मीर जाफर के पुत्र मीरन अली खान ने हत्या की। 1764 में हुए बकसार के युध्द के बाद बंगाल बिहार, और ओडीशा (ओरीसा) इन प्रांतो की व्यवस्था अंग्रेजो ने अपने हाथ मे ली।

प्लासी की लढाई के पहले सिराज उद दौला को उसकी माँ ने प्रभावी मार्गदर्शन कीया था। और मातृभुमी के लिए शहीद होने का उपदेश दिया था। माँ के वो उपदेश का सिराज उद दौला पर प्रभावी परीणाम हुआ। उस ने सचमुच मातृभुमी के लिए प्राणो का बलीदान दीया। प्लासी के युध्द मे अंग्रेजो की जीत के कारण भारत मे एक नये इतिहास की शुरुवात हुई। प्रसिध्द कवी चंद्रसेन के मतानुसार "प्लासी की लढाई मे नवाब की हार से भारत मे पराधीनता की काली अंधेरी रात शुरु हो गयी। संपुर्ण भारत पर स्वामीत्व प्रस्थापीत करने का कंपनी का मार्ग प्रशस्त हो गया"3

प्लासी की लढाई मे नवाब की हार के कारण भारत मे बंगाल में अंग्रेजी शासन का पौधा लग गया सर जदुनाथ सरकार के मतानुसार "23 जुन 1757 को भारतीय ईतिहास का मध्यकाल समाप्त होकर आधुनिक काल की सुरुवात हुई"

निष्कर्ष :-

१. यहाँ पर बंगाल के तत्कालीन नवाब सिराज-उद-दौला का राष्ट्रप्रेम सिध्द होता है ।

२. भारत में अंग्रेजों ने अपनी सत्ता प्रस्थापीत करने के लिए अलग-अलग मार्गो का उपयोग किया ।

३. अगर मीर जाफर जो नवाब सिराज-उद-दौला का सेनापती था । वो अंग्रेजों से जाकर नही मिलता तो आज भारत का ईतिहास थोडा अलग लिखा गया होता।

४.नवाब सिराज-उद-दौला के सहकारी और उसके निकट के अधिकारी जो नवाब को धोका दे रहे थे । इस बात का पता चलते ही नवाब ने उन्हे कडा शासन या कडा दंड देना चाहिए था । मगर नवाब सिरा-उद-दौला ने ऐसा नही किया । जिस से बंगाल के प्रशासन की पकड दिन ब दिन कमजोर होती गई इस का अंग्रेजों ने फायदा उठाया ।

५. प्लासी की लढाई में हार के कारण भारत में अंग्रेजी शासन या ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का मार्ग प्रशस्त हो गया ।

संदर्भ :-

१. लेखक-डॉ.एम.एस.त्यागी:- आधुनीक भारत. पृष्ठ क्र. 59 राधा पब्लिकेशन. नई दिल्ली.

2. लेखक-डॉ.एम.एस.त्यागी:- आधुनीक भारत. पृष्ठ क्र. 61 राधा पब्लिकेशन. नई दिल्ली.

3.लेखक-प्रो.एस.एस.भांडवलकर:- आधुनिक भारत. पृष्ठ क्र.09 अभिजीत पब्लिकेशन लातुर.(महाराष्ट्र) प्रथम आवृत्ती 1998

उपयोग में लाई गई पुस्तके :-

1. लेखक-न.स.दिक्षीत:-मराठे व ब्रिटीश कालीन भारत. पिंपळा पुरे अँड पब्लिशर्स. नागपुर. महाराष्ट्र.

2. Writer :- M.D.Iliyas Nadvi Bhatkali:-Tipu Sultan a life History. Published by Genuine Publication & Media Pvt. Ltd. Nizamuddin west. New Delhi-110 013

3. Writer :- Moojumdar R.C. – An advanced History of India.

4. लेखक :- मौलाना सय्यद मोहम्मद मियाँ :- उलमा-ए-हिंद का शानदार माजी. खंड. दुसरा. प्रकाशक :- एम.ब्रदर्स किताबीस्तान दिल्ली. प्रथम आवृत्ती-1940.

5. Writer :- Shaan Muhammad. Muslims and India's freedom movement. Publication:- Institute of Objective studies New Delhi. First Edition :- 2002.

Scanned by CamScanner

THIS QUARTERLY " POWER OF KNOWLEDGE " IS PRINTED BY,
PUBLISHED BY & OWNED BY SAW. SARKATE LATA SADASHIV &
PRINTED AT SHRADHA ENTERPRIZES, OPP. TAHSIL OFFICE,
NAGAR ROAD,BEED. TQ. & DIST. BEED - 431 122 (M.S.) &
PUBLISHED AT BHAVANI PARK, GANESH NAGAR, GEORAI,
TAL. GEORAI, DIST. BEED 431 127 (M. S.)
EDITOR : Dr. SARKATE SADASHIV

Scanned by CamScanner